SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

सतप्रित कौर, एम.एड. शोधार्थी, शिक्षा संकाय,
प्राची भट्ट, शिक्षा संकाय,
प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
सतप्रित कौर, एम.एड. शोधार्थी, शिक्षा संकाय,
प्राची भट्ट, शिक्षा संकाय,
प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी,
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 20/07/2022
Revised on : -----
Accepted on : 27/07/2022
Plagiarism : 09% on 21/07/2022

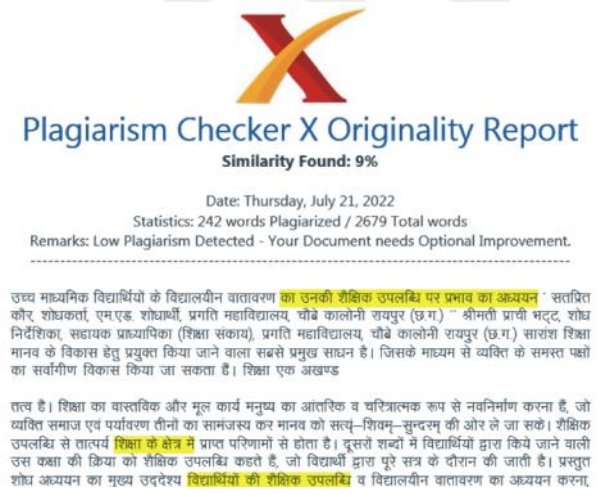

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 9%

Date: Thursday, July 21, 2022
Statistics: 242 words Plagiarized / 2679 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

उच्च माध्यमिक विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन ' सतप्रित कौर, शोधकर्ता, एम.एड. शोधार्थी, प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी रायपुर (छ.ग.) '' श्रीमती प्राची भट्ट, शोध निर्देशिका, सहायक प्राध्यापिका (शिक्षा संकाय), प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी रायपुर (छ.ग.) सारांश शिक्षा मानव के विकास हेतु प्रयुक्त किया जाने वाला सबसे प्रमुख साधन है। जिसके माध्यम से व्यक्ति के समस्त पक्षों का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है। शिक्षा एक अखण्ड

तत्व है। शिक्षा का वास्तविक और मूल कार्य मनुष्य का आंतरिक व चरित्रात्मक रूप से नवनिर्माण करना है, जो व्यक्ति समाज एवं पर्यावरण तीनों का सामंजस्य कर मानव को सत्यं–शिवम्–सुन्दरम् की ओर ले जा सके। शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त परिणामों से होता है। दूसरों शब्दों में विद्यार्थियों द्वारा किये जाने वाली उस कक्षा की क्रिया को शैक्षिक उपलब्धि कहते है, जो विद्यार्थी द्वारा पूरे सत्र के दौरान की जाती है। प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व विद्यालयीन वातावरण का अध्ययन करना,

शोध सार

शिक्षा मानव के विकास हेतु प्रयुक्त किया जाने वाला सबसे प्रमुख साधन है। जिसके माध्यम से व्यक्ति के समस्त पक्षों का सर्वांगीण विकास किया जा सकता हैं। शिक्षा एक अखण्ड तत्व है। शिक्षा का वास्तविक और मूल कार्य मनुष्य का आंतरिक व चरित्रात्मक रूप से नवनिर्माण करना हैं, जो व्यक्ति समाज एवं पर्यावरण तीनों का सामंजस्य कर मानव को सत्यं–शिवम्–सुन्दरम् की ओर ले जा सके। शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त परिणामों से होता है। दूसरों शब्दों में विद्यार्थियों द्वारा किये जाने वाली उस कक्षा की क्रिया को शैक्षिक उपलब्धि कहते हैं, जो विद्यार्थी द्वारा पूरे सत्र के दौरान की जाती है। प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व विद्यालयीन वातावरण का अध्ययन करना, विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं विद्यालयीन वातावरण के मध्य संबंध का अध्ययन करना तथा ग्रामीण व शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं विद्यालयीन वातावरण के मध्य संबंध का अध्ययन करना था। अध्ययन के लिए रायपुर जिले के ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के प्रत्येक विद्यालय से 20 छात्र एवं 20 छात्राएं कुल 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। समस्या के समाधान के लिए सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक स्तर के रायपुर जिले के 5 विद्यालयों में अध्ययनरत प्रत्येक विद्यालय से 20 छात्र एवं 20 छात्राएं कुल 200 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रुप में किया गया है। अध्ययन में प्रतिशत विधि का प्रयोग किया गया है। परिणाम में विद्यालयीन वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर धनात्मक प्रभाव पाया गया।

मुख्य शब्द

शिक्षा, विद्यालय, ग्रामीण, शहरी.

भूमिका

शिक्षा मानवीय चेतना का वह सांस्कृतिक पक्ष हैं, जिससे व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास होता है। शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया हैं शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य मानव में मानवीय गुणों का विकास कर उसे उस योग्य बनाना हैं कि वह मानव संस्कृति को अधिक सुंदर और संपन्न बनाने में अपना सक्रिय योगदान दे सके शिक्षित व्यक्ति अपने समाज व स्वयं की परिस्थितियों के साथ उचित समायोजन करके जीवन सुव्यवस्थित और सुखी बनाता है। ज्ञान अनुभवों और समायोजन द्वारा अपने व्यवहार को अधिक समाजोपयोगी, शुद्ध और कल्याणकारी बनाता है। शिक्षा के उद्देश्य चाहे किसी भी प्रकार के क्यों न हो गए हो जिससे मानव व्यवहार इस तरह से संशोधित किया जाता है कि वह या तो समाज अथवा किसी आदर्श के निकटतर हो आजकल विद्यालयों में यह कामना की जाती है कि अधिकांशतः ऐसे व्यक्ति का सृजन किया जाए जो की शारीरिक और सामाजिक दोनों प्रकार की समस्याओं का समाधान करने में प्रभावशाली हो।

विद्यालयीन वातावरण

शैक्षिक संस्थाओं की स्थापना का मुख्य ध्येय बालक का सर्वांगींण विकास करना होता है। इसलिए विद्यालय प्रशासन का उद्देश्य भी इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सक्रिय योग प्रदान करना होना चाहिए। विद्यालय संगठन को ऐसे विद्यालयीन वातावरण के निर्माण की ओर ईमानदारी के साथ कार्य करना चाहिए। बालक के व्यक्तित्व का संतुलित विकास करने की दृष्टि से शैक्षणिक संस्थाओं का ध्येय उनके शारीरिक मानसिक चारित्रिक एवं सामाजिक गुणों का विकास करते हुए उसकी शैक्षिक उपलब्धि को इस योग्य बनाना चाहिए जिससे कि वह भावी जीवन में अपने दायित्वों का निर्वाह सफलता एवं सच्चाई के साथ कर सके।

नेटजर एवं आईक के अनुसार

''शैक्षणिक संस्था ने पर्यावरण के साथ अन्तः क्रिया करने वाले जटिल सामाजिक तकनीकी तंत्र है, जिनकी अनुकुल और निर्वाद क्रियाविधि दोनों विशेषताएं होती है।''

केण्डल के अनुसार

''शिक्षा प्रणालियां अपने संस्कृति पर्यावरण से प्रभावित होती है, केवल राष्ट्रीय प्रणालियां एक दूसरे से भिन्न होती है, बल्कि लोकतंत्र के अंतर्गत जहाँ विकेन्द्रीकरण को प्रोत्साहन प्राप्त है, स्थानीय प्रणालियां भी कई बातों में एक दूसरे से भिन्न होती है।

विद्यालयीन वातावरण की अवधारणा

''विद्यालयीन वातावरण शब्द का प्रयोग संस्था में व्यक्तियों द्वारा अपने कार्यो तथा कर्तव्यों की अपने साथ व्याख्या करने के मधुर सम्मिक्षण को निर्दिष्ट करने में किया गया है।''

आर. टैगिरी एवं जी.एच.लिटविन के अनुसार

''विद्यालयीन वातावरण संस्था के आंतरिक वातावरणों का एक चिरस्थाई गुण है।''

1. जिसकी उनके सदस्यों द्वारा अनुभव किया जाता है।
2. जो सदस्यों के व्यवहार को प्रभावित करता है।
3. जिसका वर्णन संस्था के विशेषताओं के मूल्यों के बदले में किया जा सकता है।

इवान के अनुसार

''विद्यालयीन वातावरण शब्द का तात्पर्य पर्यावरण संबंधी चरों और एक समूह अथवा समूहों के वैयक्तिगत चरों

के बीच अंतःक्रिया से है जो एक संस्था में कार्य संचालन करते है।''

शैक्षिक उपलब्धि

शैक्षिक उपलब्धि को कक्षा का वातावरण, पारिवारिक आर्थिक स्तर, विद्यालयी समायोजन, सामाजिक धार्मिक स्थिति, रूचियां तथा आकांक्षा स्तर, आत्मविश्वास इत्यादि घटक प्रभावित करते हैं। शैक्षिक उपलब्धि वर्तमान सामाजिक आर्थिक सन्दर्भ इत्यादि में सर्वोतम, विशिष्ट व महत्वपूर्ण कारक है। स्पष्ट रूप से शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थी की सभी उपलब्धियों को प्रभावित करती है तथा स्वयं अन्य गतिविधियों व उपलब्धियों से प्रभावित होती है। शैक्षिक उपलब्धि, निष्पति परीक्षणों एवं विषयों की निष्पति के आधार पर निर्धारित की जाती है। बालकों को किसी न किसी उद्देश्यों को दृष्टि में रखकर शिक्षा दी जाती है। और इन उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुई है। इसी की जांच के लिए शैक्षिक निष्पति का प्रयोग किया जाता है। जिस प्रकार पदार्थ का मापन संभव है उसी प्रकार शिक्षा की उपलब्धियों का मूल्यांकन भी संभव है। शैक्षिक उपलब्धि शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त किया गया कौशल एवं ज्ञान है जिसका मापन किया जा सके।

शैक्षिक उपलब्धियों के आधार पर ही हम विद्यार्थियों के मध्य अन्तर कर सकते हैं, कि यह बालक प्रतिभाशाली है, सामान्य है अथवा कमजोर है। शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थी द्वारा अधिगम किये गये व प्रयोग में लाये गये ज्ञान को मापने का सर्वोत्तम साधन है। विद्यालयों में विभिन्न कक्षाओं में छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का मापन या मूल्यांकन करने के लिए छात्रों की विभिन्न उपलब्धि परीक्षाएं आयोजित की जाती है।

फ्रीमेन के अनुसार ''शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण, वह परीक्षण है जो किसी विशेष विषय अथवा पाठयक्रम के विभिन्न विषयों में व्यक्ति के ज्ञान, समझ और कुशलताओं का मापन करता है।''

हाक्वीस्ट के अनुसार ''शैक्षिक उपलब्धि वह परिणाम है जो विद्यार्थियों को उनके कार्य करने के लिए प्रेरित व उत्साहित करता है।'' लिंडक्विस्ट एवं मन के अनुसार ''एक सामान्य निष्पति परीक्षण वह है, जो एक ही विद्यार्थी के सापेक्षिक ज्ञान का बोध कराये।

शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारक

- **संज्ञानात्मक कारकः** शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले संज्ञानात्मक कारको के अन्तर्गत बुद्धि, सृजनात्मकता, भाषायी योग्यताएँ आदि आते है।
- **असंज्ञानात्मक कारकः** इसमें आत्मविश्वास, आत्मप्रत्यय, समायोजन, आकांक्षा स्तर, आवश्यकता, अभिप्रेरणा, अभियोग्यता चिन्तन योग्यता आदि आते है।
- **विद्यालयी वातावरणः** शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने में वातावरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है इसके अन्तर्गत स्कूल का सामाजिक एवं आर्थिक स्तर, शिक्षकों का आकांक्षा स्तर, शिक्षकों एवं सहपाठियों की व्यवहार एवं कुशलता।

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है। वर्तमान परिवेश में बालकों की अध्ययन उपलब्धि में व्यापक परिवर्तन आ रहे है। विद्यार्थियों के उपलब्धि पर घर परिवार के वातावरण के साथ–साथ विद्यालयीन वातावरण का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। अतः विद्यालय प्रबंधन को इस बात की महत्ता को ध्यान में रखते हुए अपने विद्यालय में ऐसा वातावरण निर्मित करना चाहिए। जिससे वहाँ अध्ययनरत विद्यार्थियों में अपने–अपने कर्तव्य दायित्व का निर्वहन कर सके।

अध्ययन का महत्व

शैक्षिक अनुसंधान का शिक्षा प्रक्रिया में आवश्यक सुधार एवं विकास के लिए विशेष महत्व है। शिक्षा का मुख्य ध्येय जीवन में सुधार लाना तथा विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है। वर्तमान समय में विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातावरण में व्यापक परिवर्तन हुआ। इन परिवर्तनों का अध्ययन तथा त्रुटियों के निवारण के द्वारा जागृत

की जा सकेगी और विद्यालयीन वातावरण के माध्यम से विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि की जा सकेगी तथा प्रगति पथ की ओर अग्रसर होगा। छात्र और छात्राओं दोनों वर्गो को ऐसा आदर्श विद्यालयीन वातावरण उन्हें उपलब्ध कराये जो उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक प्रभाव डाल सके। अतः शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालयीन वातावरण के पड़ने वाले प्रभाव के संबंध के अध्ययन से जो निष्कर्ष प्राप्त होगा वह शिक्षा क्षेत्र के विकास में निश्चित रुप से लाभदायक सिद्ध होगा।

पूर्व में किए गए शोध कार्य

भारत में किए गए शोध अध्ययन

द्विवेदी, रमेश धर (2014) ने बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पारिवारिक परिवेश, माता की शिक्षा तथा शैक्षिक जागरूकता का प्रभाव का अध्ययन किया, अध्ययन से निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि नियंत्रण, संरक्षण, दंड, सामाजिक अलगाव, पुरस्कार, वंचन अस्वीकृति आदि का बालिकाओं की उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है जबकि सहमति पोषण एवं वर्जनाहीनता का उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं है। माताओं की शिक्षा तथा अभिभावक जागरूकता भी उपलब्धि को सार्थक रूप से प्रभावित करती है।

मीणा, सीमा (2014) ने अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनके पारिवारिक वातावरण, सामाजिक–आर्थिक स्तर व शैक्षिक अभिप्रेरणा के परिपेक्ष्य में तुलनात्मक अध्ययन किया एवं निष्कर्ष स्वरूप पाया कि अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण (अनुकूलित व सामान्य) से सम्बन्धित आंकड़ो का प्रतिशतांक वितरण लगभग समान है एवं प्रतिकूलित पारिवारिक वातावरण कम पाया गया। अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण, अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण से सार्थक रूप से उच्च है। इसका कारण यह हो सकता है कि प्रस्तुत अध्ययन में जिस भौगोलिक क्षेत्र को लिया गया है, यहां अनुसूचित जनजाति के व्यक्तियों का आधिपत्य है। परिवारिक वातावरण का अनुसूचित जनजाति व अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है क्योंकि सकारात्मक पारिवारिक वातावरण विद्यार्थियों को शैक्षिक प्रेरणा व सकारात्मक सहायोग प्रदान करता है इसी प्रकार प्रतिकूलित वातावरण विद्यार्थियों में हीन भावना पैदा करता है जिसका उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

विदेशों में किए गए शोध अध्ययन

स्टीफन, कुमार विवेक एवं सिहं, प्रेमप्रभा (2017) ने, पुनर्बलन के संदर्भ में सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के अकादमिक उपलब्धि का अध्ययन किया। एकत्रित आँकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि इलाहाबाद जिले के माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के पुर्नबलन और शैक्षिक उपलब्धि के बीच एक महत्वपूर्ण सम्बन्ध है।

लोरना आई, गप्पी (2013) ने, विद्यार्थियों की शैक्षिक योग्यता और अधिगम शैली वरीयता के बीच सम्बन्ध का अध्ययन किया, अध्ययन से प्राप्त परिणाम दिखाते है कि छात्रों के लिंग, उम्र का उनके सीखने की शैली की वरीयताओं व शैक्षिक अभियोग्यताओं पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं था तथा अधिगम शैली पर शैक्षिक अभियोग्यता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। परिणाम के आधार पर पाया कि शैक्षिक उपलब्धि एवं अधिगम शैली वरीयता के बीच कोई सांख्यिकीय सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

समस्या कथन

"उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातावरण का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।"

प्रकार्यात्मक परिभाषा

- **उच्च माध्यमिक स्तरः** सन् 1986 में प्रभावशील नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत संपूर्ण भारत वर्ष

(10+2+3) शिक्षा पद्धति क्रियाशील है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में कक्षा 11 एवं 12 तक का विद्यालय उच्चतर माध्यमिक स्तर का कहा गया है।

- **शैक्षिक उपलब्धिः** किसी भी उपलब्धि के आंकलन के लिये जो परीक्षण किया जाता है उसे उपलब्धि परीक्षण कहते है। शैक्षिक क्षेत्र की उपलब्धि के आंकलन के लिए तैयार परीक्षण को शैक्षिक परीक्षण कहते है। शैक्षिक उपलब्धि–परीक्षण किसी विषय अथवा पाठ्क्रम के विभिन्न विषयों में विघार्थियों के ज्ञान, समझ तथा कुशलताओं का मापन करता है।
- **विद्यालयीन वातावरणः** किसी विद्यालय के विद्यालयीन वातावरण से अभिप्राय एक ऐसे वातावरण से होता है, जहाँ शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया स्वतः एवं स्वाभाविक होता है, जहाँ शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में आये अवरोधों को शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों के संयुक्त प्रयास से दूर किया जाता है, जहाँ छात्र सीखने की क्रिया में स्वयं उत्साह से भाग लेता है और अपने व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाने का प्रयास करता है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातावरण का अध्ययन करना।
3. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं विद्यालयीन वातावरण के मध्य संबंध का अध्ययन करना।
4. ग्रामीण विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं विद्यालयीन वातावरण के मध्य संबंध का अध्ययन करना।
5. शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों एवं विद्यालयीन वातावरण के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

1. विद्यालयीन वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर धनात्मक संबंध पाया जायेगा।
2. छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं विद्यालयीन वातावरण के मध्य धनात्मक संबंध पाया जायेगा।
3. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातावरण में शिक्षक व प्रधानाचार्य के मध्य धनात्मक संबंध पाया जायेगा।
4. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं विद्यालयीन वातावरण के मध्य धनात्मक संबंध पाया जायेगा।
5. उच्च माध्यमिक स्तर विद्यालय के विद्यर्थियों का वातावरण तथा शैक्षिक गतिविधि के मध्य धनात्मक संबंध पाया जाएगा ।

अध्ययन का क्षेत्र एवं परिसीमन

1. अध्ययन के लिए रायपुर जिले का चयन किया गया है।
2. रायपुर जिले के ग्रामीण तथा शहरी विद्यालयों का चयन न्यादर्श हेतु किया गया।
3. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के प्रत्येक विद्यालय से 20 छात्र एवं 20 छात्राएं कुल 200 विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा।

शोध विधि के चयन का आधार

प्रस्तुत शोध समस्या के समाधान के लिए सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है। सर्वेक्षण शोध द्वारा उद्देश्य विषय या समस्या के संबंध में यथार्थ या वास्तविक तथ्यों को एकत्रित करके उसका विस्तृत विवरण प्रस्तुत करता है।

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधानकर्ता ने रायपुर जिले के 5 विद्यालयों का चयन किया गया है, इन विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को जनसंख्या के तहत रखा गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक स्तर के रायपुर जिले के 5 विद्यालयों में अध्ययनरत प्रत्येक विद्यालय से 20 छात्र एवं 20 छात्राएं कुल 200 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रुप में किया गया है।

चर

स्वतंत्र चरः उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का विद्यालयीन वातावरण।

परतंत्र चरः विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि।

उपकरण

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में विद्यालयीन वातावरण ज्ञात करने हेतु डॉ. एम. एल. शाह एवं डा. अमिता शाह द्वारा निर्मित प्रमापीकृत एकेडमिक क्लाइमेट डेसक्रिप्सन क्वेश्चनरी ;।ब्क्फद्ध एवं शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करने हेतु डॉ. ए. सेनगुप्ता एवं प्रोफेसर ए. के. सिंग द्वारा निर्मित शैक्षिक उपलब्धि मापनी का प्रयोग किया गया है। अतः इन तथ्यों को एकत्रित करने के लिए प्रश्नावली एक उपयुक्त उपकरण है।

सांख्यिकीय विश्लेषण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रतिशत विधि का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पना का प्रमापीकरण एवं परिणाम

परिकल्पना क्रमांक 01

विद्यालयीन वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर धनात्मक प्रभाव पडेगा।''

सारणी क्रमांक 01: विद्यालयीन वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर धनात्मक प्रभाव का कथन हां, नहीं एवं कुल प्रतिशत दर्शाने वाली सारणी

क्रं.	कथन	हाँ का प्रतिशत	नहीं का प्रतिशत	कुल प्रतिशत
1.	क्या आपका विद्यालय ऐसे स्थान पर हैं जो सुविधा जनक हैं ?	70	30	100
2.	क्या आपका विद्यालय ऐसी जगह स्थित हैं जहाँ यातायात बहुत कम है ?	75	25	100
3.	क्या आपका विद्यालय ऐसी जगह स्थित हैं जहाँ शोर नहीं होता हैं ?	80	20	100
4.	क्या आपके विद्यालय की प्रत्येक कक्षा के लिए एक कमरा है ?	95	5	100
5.	क्या आपका विद्यालय शहर के मध्य में स्थित हैं ?	97	3	100
6.	क्या आपके विद्यालय में छात्रावास की सुविधा हैं ?	75	25	100
7.	क्या आपके विद्यालय खेलकूद के लिए प्रांगण है?	85	15	100
8.	क्या आपके विद्यालय में खेलकूद प्रतिस्पर्धा होती हैं ?	100	0	100

आरेख क्रमांक 1: विद्यालयीन वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर धनात्मक प्रभाव का कथन हां, नहीं एवं कुल प्रतिशत दर्शाने वाला आरेख

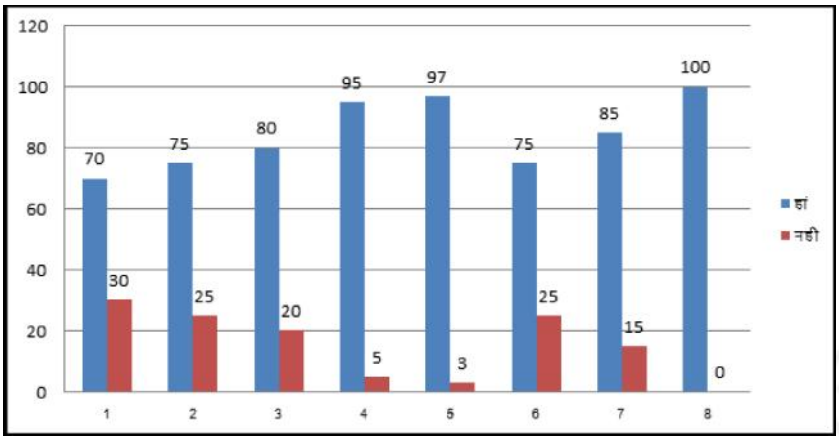

व्याख्या

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता हैं कि 70 प्रतिशत विद्यालय सुविधा जनक स्थान पर है। 100 में से 75 प्रतिशत विद्यालय ऐसी जगह पर स्थित है जहाँ शोर नहीं होता है तथा सभी स्कूलों में प्रत्येक कक्षा के लिए एक कमरा हैं और सभी विद्यालय शहर के मध्य में स्थित है। 75 प्रतिशत विद्यालय में छात्रावास की सुविधा उपलब्ध है। 85 प्रतिशत विद्यालय में खेलकूद के लिए प्रागंण है। सभी विद्यालयों में खेलकूद स्पर्धा होती है।

निष्कर्ष

कुल उत्तरदाताओं में से 72 प्रतिशत ने हाँ में उत्तर दिया। अतः विद्यालयीन वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर धनात्मक प्रभाव पाया गया। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।

सुझाव

1. प्रधानाचार्य को कक्षाओं का नियमित निरीक्षण करना चाहिए जिससे शिक्षक नियमित रुप से कक्षा लेते रहे।
2. शिक्षकों द्वारा शिक्षण पद्धति में आवश्यकतानुसार नवीनिकरण किया जाना चाहिए जिससे विद्यार्थियों में विषय के प्रति रुचि जागृत हो सकें।
3. शिक्षकों को विद्यार्थियों के साथ संबंध मधुर रखना चाहिए जिससे विद्यार्थी अपनी समस्याओं को शिक्षकों को निःसंकोच बता सकें।
4. शिक्षकों को छात्रों के साथ पक्षपातपूर्ण व्यवहार नहीं करना चाहिए।

अनुकरणीय अध्ययन

1. महाविद्यालयीन स्तर के विद्यार्थियों पर महाविद्यालय के परिवेश के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।
2. पारिवारिक वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
3. बी.एस.पी. तथा निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं विद्यालय परिवेश के मध्य संबंध का अध्ययन।
4. विद्यालय परिवेश एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य–संबंध का तुलनात्मक अध्ययन।
5. सामाजिक परिवेश व विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
6. हाई स्कुल के स्तर के अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालय परिवेश के प्रभाव का तुलनात्मक प्रभाव।
7. विद्यार्थियों के अध्ययन आदत पर परिवेश के प्रभाव का अध्ययन।

संदर्भ सूची

1. मंगल, एस. के (2010) *शिक्षा मनोविज्ञान*।
2. कपिल, एच. के (1994) *अनुसंधान विधियॉ* दर प्रसाद भार्गव।
3. आर. ए. शर्मा (2007) *शिक्षा अनुसंधान,* ध्रुव आर लाल बुक डिपो, मेरठ।
4. पाठक पी.डी. (2007) *शिक्षा मनोविज्ञान,* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
5. रामपाल सिंह (2008) *शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी,* अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा –7
6. कपिल, एच. के. (2007) *अनुसंधान विधियॉ,* एच पी भार्गव बुक हाउस आगरा।
7. अस्थाना बिपिन, *मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन,* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 2 पृ.क्र. 390–402।
8. भार्गव महेश (1982) *आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन* पृ.क्र. 245–267।
9. भटनागर सुरेश (2000) *शिक्षा मनोविज्ञान,* आर लाल बुक डिपो मेरठ 103, मोतीबाजार।
10. सरीन एवं सरीन (2008) *शैक्षिक अनुसंधान विधियॉ,* अग्रवाल, पब्लिकेशन्स आगरा।

****